তথ্যবিবরণী নম্বর : ৭৭৮

**জাতির পিতার ‘বঙ্গবন্ধু’ উপাধির অর্ধশতাব্দীর সগৌরব উদযাপন**

ঢাকা, ১৩ ফাল্গুন (২৫ ফেব্রুয়ারি):

জাতির পিতার ‘বঙ্গবন্ধু’ উপাধির অর্ধশতাব্দী  উদযাপনে প্রধানমন্ত্রীর রাজনৈতিক উপদেষ্টা এইচ টি ইমাম, সাবেক বাণিজ্যমন্ত্রী ও বঙ্গবন্ধুর  একান্ত  সহচর তোফায়েল আহমেদ, তথ্যমন্ত্রী ও আওয়ামী লীগের প্রচার ও প্রকাশনা সম্পাদক ড. হাছান মাহমুদ, শিল্পকলা একাডেমির মহাপরিচালক লিয়াকত আলী লাকীসহ আওয়ামী লীগ নেতৃবৃন্দ, বিশিষ্ট লেখক আলী ইমাম প্রমুখ ইতিহাস, বর্তমান ও ভবিষ্যতের রূপরেখায় জাতির পিতা শেখ মুজিবুর রহমানের ‘বঙ্গবন্ধু’ উপাধি ও সমগ্র জীবনের প্রেক্ষাপট তুলে ধরেছেন।

আজ সন্ধ্যায় আওয়ামী লীগের প্রচার ও প্রকাশনা উপকমিটির আয়োজনে রাজধানীর শিল্পকলা একাডেমির চিত্রশালায় দু’দিনব্যাপী আলোচনা ও সাংস্কৃতিক অনুষ্ঠানের উদ্বোধনী পর্বে এইচ টি ইমামের সভাপতিত্বে প্রধান আলোচক হিসেবে বক্তব্য রাখেন তোফায়েল আহমেদ।

সাবেক বাণিজ্যমন্ত্রী ও বঙ্গবন্ধুর  একান্ত  সহচর তোফায়েল আহমেদ বলেন, ‘প্রতি বছর ২৩ ফেব্রুয়ারি যখন ফিরে আসে, স্মৃতির পাতায় অনেক কথা ভেসে ওঠে। আমার জীবনের শ্রেষ্ঠ এই দিনটিকে গভীরভাবে স্মরণ করি। ১৯৬৯-এর ২৩ ফেব্রুয়ারির পর থেকে বঙ্গবন্ধুর একান্ত সান্নিধ্য পেয়েছি। এবারে ‘বঙ্গবন্ধু’ উপাধি প্রদানের ৫০ বছর। দেখতে দেখতে অর্ধশত বছর পেরিয়ে গেল। প্রিয় নেতা তাঁর যৌবনের ১৩টি মূল্যবান বছর পাকিস্তানের কারাগারে কাটিয়েছেন। কারাগারের অন্ধকার প্রকোষ্ঠে বসে যে নেতা প্রিয় মাতৃভূমি বাংলার ছবি হৃদয় দিয়ে এঁকেছেন, ফাঁসির মঞ্চে দাঁড়িয়ে হাসিমুখে মৃত্যুকে আলিঙ্গন করেছেন, সেই নেতাকে সেদিন জাতির পক্ষ থেকে কৃতজ্ঞচিত্তে ‘বঙ্গবন্ধু’ উপাধিতে ভূষিত করা হয়। তিনি শুধু বাঙালি জাতিরই মহান নেতা ছিলেন না, সারা বিশ্বের নিপীড়িত মানুষের অন্যতম শ্রেষ্ঠ নেতা ছিলেন।’

তোফায়েল আহমেদ বলেন, ‘১৯৬৯ সালের ২৩ ফেব্রুয়ারি শুধু আমার জীবনে নয়, সমগ্র বাঙালি জাতির জীবনে এক ঐতিহাসিক দিন। কারণ এই দিনটিতে আমাদের প্রিয় নেতাকে আমরা K…ZÁwP‡Ë বাঙালি জাতির পক্ষ থেকে কৃতজ্ঞচিত্তে ‘বঙ্গবন্ধু’ উপাধি দিয়েছিলাম। সেই সংবর্ধনা সভায় সভাপতিত্ব করার দুর্লভ সৌভাগ্যের অধিকারী আমি। আজকের সোহরাওয়ার্দী উদ্যান সেদিন ১০ লক্ষাধিক মানুষের উপস্থিতিতে কানায় কানায় পূর্র্ণ। সেই জনসমুদ্রের মানুষকে যখন জিজ্ঞাসা করেছিলাম, যে নেতা জীবনের যৌবন কাটিয়েছেন পাকিস্তানের কারাগারে, ফাঁসির মঞ্চে দাঁড়িয়ে মৃত্যুকে আলিঙ্গন করেছেন, সেই প্রিয় নেতাকে K…ZÁ বাঙালি জাতির পক্ষ থেকে K…ZÁচিত্তে একটি উপাধি দিতে চাই। ১০ লাখ মানুষ যখন ২০ লাখ হাত উত্তোলন করেছিল সে এক অভূতপূর্ব দৃশ্য। তখনই প্রিয় নেতাকে ‘বঙ্গবন্ধু’ উপাধিতে ভূষিত করা হয়।’ ‘বঙ্গবন্ধু চলে গেছেন। কিন্তু আমাদের জন্য রেখে গেছেন তাঁর গৌরবময় অমর কীর্তি’, বলেন তিনি।

প্রধানমন্ত্রীর রাজনৈতিক উপদেষ্টা এইচ টি ইমাম বলেন, ‘বাঙালি জাতিসত্তার পরিচয়ের রূপকারই জাতির পিতা সর্বকালের শ্রেষ্ঠ বাঙালি বঙ্গবন্ধু শেখ মুজিবুর রহমান। তিনি অমর।’ এ সময় তিনি এ সফল আয়োজনের প্রচার উপকমিটিকে ধন্যবাদ জানান।

তথ্যমন্ত্রী ড. হাছান মাহমুদ তার বক্তৃতায় বলেন, ‘বঙ্গবন্ধু’র কাছে বাঙালি জাতির ঋণ শোধ হবার নয়। বঙ্গবন্ধু না হলে স্বাধীনতা অর্জিত হতো না। ১৯৬৬ সালের আওয়ামী লীগ সম্মেলনে তিনি ‘আমার সোনার বাংলা’ গানটির সূচনা করেন, যা আজ আমাদের জাতীয় সংগীত। স্বাধীনতা অর্জনের বহু আগে থেকে তিনি স্বাধীনতার স্বপ্ন দেখেছেন।’ ‘অসীম দূরদৃষ্টিসম্পন্ন বঙ্গবন্ধু’র সুব্যবস্থাপনার কারণেই আজ আমরা সমুদ্রের নিচে আরেক বাংলাদেশ জয় করেছি,  ছিটমহলের সবচেয়ে সুন্দর সমাধান পেয়েছি’, বলেন তিনি।

ঢাকা দক্ষিণ আওয়ামী লীগের সাধারণ সম্পাদক শাহে আলম মুরাদ, আওয়ামী লীগ প্রচার উপকমিটির যুগ্ম সম্পাদক আমিন উদ্দিন আমিন প্রমুখ সভায় বক্তব্য রাখেন।

এর পর দু‘দিনব্যাপী বঙ্গবন্ধু’র ওপর ৬০০ আলোকচিত্র প্রদর্শনী ও সাংস্কৃতিক আয়োজন উদ্বোধন করেন অতিথিবৃন্দ।

**সরকার উৎখাতের লক্ষ্যেই বিডিআর বিদ্রোহ ঘটানো হয়েছিল**

**-- তথ্যমন্ত্রী**

তথ্যমন্ত্রী ড. হাছান মাহমুদ ২০০৯ সালের এদিনে রাজধানীর পিলখানায় তৎকালীন বিডিআর সদর দপ্তরের বেদনাময় স্মৃতির কথা উল্লেখ করে এ সময় বলেন, ‘সরকার উৎখাতের লক্ষ্যেই বিডিআর বিদ্রোহ ঘটানো হয়েছিল। ‘সেইসাথে, মার্কিন রাষ্ট্রদূতের সাথে বিএনপি’র সাক্ষাতের বিষয়ে তিনি বলেন, ‘ক্ষমতার মালিক জনগণ, বিদেশিদের কাছে ধর্ণা দিয়ে লাভ নেই।’

#

আকরাম/মাহমুদ/মোশারফ/রেজাউল/২০১৯/২১৪৪ ঘণ্টা

Z\_¨weeiYx b¤^i : 777

**cwiKíbv ev¯Íevq‡b mwVK Z\_¨ cÖ‡qvRb**

**---cwiKíbv gš¿x**

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

cwiKíbv gš¿x Gg G gvbœvb e‡j‡Qb, miKv‡ii jÿ¨ 21 kZ‡Ki P¨v‡jÄ †gvKvwejv K‡i DbœZ RvwZ Mov| GRb¨ mwVK Z\_¨ Acwinvh©|

gš¿x AvR XvKvq K…wlwe` Bbw÷wUDkb Af& evsjv‡`‡k Ôb¨vkbvj IqvK©kc Ab WvUv : ‡cÖkvm wi‡mvm© 21 †mÂywiÕ welqK GK Kg©kvjvq cÖavb AwZw\_i e³„Zvq G K\_v e‡jb|

gš¿x e‡jb, †h‡Kv‡bv cwiKíbv ev¯Íevq‡bi Rb¨ cÖ‡qvRb mwVK Z\_¨| mßg-cÂevwl©Kx cwiKíbv ev †Wëv cø¨vb hvB ejyb bv †Kb, ev¯Íevq‡bi Rb¨ mwVK Z‡\_¨i †Kv‡bv weKí †bB| Dbœq‡b MÖnY‡hvM¨ Z\_¨ mevi Rb¨ Db¥y³ nIqv DwPZ e‡j g‡b K‡i gš¿x e‡jb, Z\_¨ h‡Zv †ewk mg„× n‡e cwiKíbv ev bxwZ ‰Zwi Z‡Zv mnR n‡e|

Abyôv‡b Av‡iv e³e¨ †`b cÖavbgš¿xi Kvh©vj‡qi GmwWwR (‡UKmB Dbœqb jÿ¨gvÎv) welqK gyL¨ mgš^qK Aveyj Kvjvg AvRv`, AvBwmwU wefv‡Mi mwPe GbGg wRqvDj Avjg, ¯^v¯’¨ wefv‡Mi mwPe Avkv`yj Bmjvg Ges evsjv‡`‡k wbhy³ BDGbwWwc-Gi AvevwmK cÖwZwbwa my`xß gyLvwR©|

#

kv‡n`/gvngy`/‡gvkvid/AveŸvm/2019/2115 NÈv

Z\_¨weeiYx b¤^i : 776

**miKvi m¦v¯’¨Lv‡Z wWwRUvj cªhyw³i e¨envi‡K ¸iæZ¡ w`‡”Q**

**---m¦v¯’¨gš¿x**

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

¯^v¯’¨ I cwievi Kj¨vY gš¿x Rvwn` gv‡jK e‡j‡Qb, cÖavbgš¿x †kL nvwmbvi †bZ…‡Z¡ evsjv‡`k miKvi me bvMwiK‡`i ¯^v¯’¨‡mev wbwðZ Ki‡Z ¯^v¯’¨Lv‡Z wWwRUvj cÖhyw³i e¨env‡i ¸iæZ¡ w`‡q‡Q| wZwb e‡jb, ÔwWwRUvj ¯^v¯’¨‡mev ¯’vc‡b wekvj wewb‡qvM Kiv n‡q‡Q, KviY Avgv‡`i cÖavb AMÖvwaKvi ¯^v¯’¨Lv‡Z GmwWwR AR©b, cÖvwZôvwbK weZiY Ges wkï I gvZ…g„Zz¨ nvi n«vm wbwðZ KivÕ|

AvR †mvgevi w`jøxi GKwU †nv‡U‡j PZy\_© †Møvevj wWwRUvj †nj&\_ cvU©bviwkc (wRwWGBPwc) m‡¤§j‡b GKwU cÖ‡kœi DË‡i gš¿x Gme K\_v e‡jb|

¯^vMwZK fviZ, evsjv‡`k, hy³ivóª, hy³ivR¨, KvbvWv, myBRvij¨vÛ, Rvcvb, `wÿY †Kvwiqv, wm½vcyi, †mŠw` Aviemn †dviv‡gi m`m¨ 23 †`‡ki gš¿x, miKvwi I †emiKvwi ms¯’vi cÖwZwbwae„›` GB m‡¤§j‡b Ask wb‡”Qb|

Gi Av‡M fvi‡Zi ¯^v¯’¨gš¿x RMr cÖKvk bvÏvi `yB w`‡bi kxl© m‡¤§j‡bi D‡Øvab K‡ib hvi g‡a¨ 23 m`m¨ ivó« I wek¦ ¯^v¯’¨ ms¯’v (WweøDGBPI) cªwZwbwaiv Zv‡`i †`ke¨vcx e³…Zv Dc¯’vcb K‡i|

evsjv‡`‡ki ¯^v¯’¨Lv‡Z wWwRUvj cÖhyw³i e¨envi m¤ú‡K© msw¶ß weeiY cª`vb K‡i Rvwn` gv‡jK e‡jb, †`‡ki mvgwMÖK ¯^v¯’¨‡mev myweavi DbœwZi Rb¨ GB ai‡bi cªhyw³ Z…Zxq ¯Í‡ii ¯^v¯’¨‡mevq e¨envi Kiv n‡”Q| evsjv‡`‡k wWwRUvj ¯^v¯’¨ n¯Í‡¶c wbwðZ Kivi Rb¨ bxwZ ev¯Íevq‡bi wel‡q wZwb e‡jb, eZ©gvb miKvi †`‡ki 14 nvRvi KwgDwbwU wK¬wb‡Ki gva¨‡g 32wUiI †ewk Jla mieivn Ki‡Q, ¯^v¯’¨‡mev cÖ`vbKvix‡`i cwi‡mev †iKwW©s‡qi Rb¨ U¨ve †`Iqv n‡q‡Q Ges wUKv I Jla MÖn‡Yi Rb¨ evZ©v †`Iqv n‡q‡Q gv Ges wkï‡`i Rb¨| wZwb Av‡iv e‡jb, ¯^v¯’¨‡mev wbwðZ Kivi j‡¶¨ mKj ¯^v¯’¨‡mev e¨e¯’vcbvi Rb¨ wWwRUvj ch©‡e¶Y e¨e¯’v ¯’vcb Kiv n‡q‡Q hv‡Z ¯^v¯’¨‡mev wbwðZ Kiv hvq Ges mKj nvmcvZvj I wK¬wb‡K B›Uvi‡bU ms‡hvM mieivn Kiv nq|

#

cixwÿr/gvngy`/iwdKzj/AveŸvm/2019/2100 NÈv

b¤^i : 775

**†Uwjwfk‡b ¯Œj AvKv‡i cÖPv‡ii Rb¨**

mKj B‡jKUªwbK wgwWqv

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

Ò2019 mv‡j miKvwi I †emiKvwi e¨e¯’vcbvi nRhvÎx wbeÜb Pj‡Q| wba©vwiZ mg‡q wbeÜb m¤úbœ Kivi Rb¨ Aby‡iva Kiv hv‡”Q| h\_vmg‡q wbeÜb m¤úbœ Kiv bv n‡j G eQi nR cvj‡b AvMÖnx bb g‡g© we‡ewPZ n‡Z cv‡ib|Ó

D³ evZ©vwU ¯Œj AvKv‡i mKj miKvwi I †emiKvwi wUwf P¨v‡b‡j cÖPv‡ii Rb¨ Aby‡iva Rvbv‡bv hv‡”Q|

#

gvngy`/†iRvDj/2019/2055 NÈv

Z\_¨weeiYx b¤^i : 774

**wPwKrmK‡`i h\_vh\_ `vwqZ¡ cvj‡bi AvnŸvb hye I µxov cÖwZgš¿xi**

MvRxcyi, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

hye I µxov cÖwZgš¿x †gvt Rvwn` Avnmvb iv‡mj MvRxcyi knx` ZvRDÏxb Avng` †gwW‡Kj K‡jR nvmcvZv‡j gvbm¤§Z ¯^v¯’¨‡mev wbwðZ Kivi wb‡`©kbv cÖ`vb K‡i‡Qb| wZwb AvR MvRxcyi knx` ZvRDÏxb Avng` †gwW‡Kj K‡jR nvmcvZv‡ji m‡¤§jb K‡ÿ e¨e¯’vcbv KwgwUi mfvq mfvcwZi e³‡e¨ G wb‡`©kbv cÖ`vb K‡ib| mfvi ïiæ‡Z wZwb cyivb XvKvi PKevRv‡i gg©vwšÍK AwMœKv‡Ð wbnZ‡`i cÖwZ Mfxi †kvK cÖKvk K‡ib|

hye I µxov cÖwZgš¿x e‡jb, wPwKrmv †mev cÖvwß gvby‡li GKwU †gŠwjK AwaKvi| ZvB †ivMx‡`i mwVK †mev wbwðZK‡í wPwKrmK I bvm©‡`i h\_vh\_fv‡e `vwqZ¡ cvjb Ki‡Z n‡e| G mgq wZwb knx` ZvRDÏxb Avng` †gwW‡Kj K‡jR nvmcvZvj‡K AvaywbK I DbœZ my‡hvM myweav msewjZ GKwU c~Y©v½ nvmcvZv‡j DbœxZ Kivi `„p cÖZ¨q e¨³ K‡ib| Gi ci cÖwZgš¿x WvqvjvBwmm BDwb‡Ui D‡Øvab K‡ib| wZwb AwP‡iB nvmcvZv‡j wmwmBD I AvBwmBD Pvjy Kiv n‡e g‡g© Avkvev` e¨³ K‡ib|

nvmcvZv‡ji wbivcËv weav‡bi j‡ÿ¨ †K¬vR mvwK©U K¨v‡giv ¯’vcb I ch©vß Rbej wb‡qv‡Mi wel‡q cÖwZgš¿x nvmcvZvj KZ©…cÿ‡K wb‡`©kbv cÖ`vb K‡ib|

mfvq knx` ZvRDÏxb Avng` †gwW‡Kj K‡jR nvmcvZv‡ji cwiPvjK Wvt Avwgi †nv‡mb ivnvZ, nvmcvZv‡ji fvicÖvß Aa¨ÿ Wvt Avãyj Kvw`i mn e¨e¯’vcbv KwgwUi m`m¨e„›` Dcw¯’Z wQ‡jb|

#

Avwid/gvngy`/mÄxe/AveŸvm/2019/2030 NÈv

Z\_¨weeiYx b¤^i : 773

PKevRv‡ii AwMœ `yN©Ubv

**wbnZ‡`i 25 Rb kÖwgK e‡j wbwðZ K‡i‡Q ZvwjKv cÖYqb KwgwU**

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

PKevRv‡ii fqven AwMœ `yN©Ubvq wbnZ-AvnZ‡`i g‡a¨ 35 Rb wewfbœ †ckvq Kg©iZ kÖwgK wQ‡jb e‡j wbwðZ K‡i‡Q kÖg I Kg©ms¯’vb gš¿Yvjq †\_‡K AwMœ `yN©Ubvq wbnZ I AvnZ kÖwgK‡`i c~Y©v½ ZvwjKv cÖYq‡bi Rb¨ MwVZ Pvi m`‡m¨i KwgwU| KwgwUi Z\_¨g‡Z, gg©vwšÍK G AwMœ `yN©Ubvq wewfbœ †ckvq wb‡qvwRZ 25 Rb kÖwgK wbnZ Ges 10 Rb kÖwgK AvnZ nb|

`yN©Ubvq nZvn‡Zi NUbvq kÖg I Kg©ms¯’vb cÖwZgš¿x †eMg gbœyRvb mywdqvb Mfxi †kvK Ges mg‡e`bv cÖKvk K‡i wbnZ kÖwgK‡`i GK jvL Ges AvnZ kÖwgK‡`i cÂvk nvRvi UvKv Avw\_©K mnvqZvi †NvlYv †`b|

kÖgNb GjvKvq AwMœ `yN©Ubv msNwUZ nIqvq cÖwZgš¿xi wb‡`©‡k 22 †deªæqvwi KjKviLvbv I cÖwZôvb cwi`k©b Awa`ß‡ii Dc-gnvcwi`k©K RvwKi †nv‡mb‡K AvnŸvqK K‡i 4 m`‡m¨i KwgwU MVb K‡i gš¿Yvjq| KwgwUi m`m¨MY XvKv †gwW‡K‡ji mv‡\_ mgwš^Zfv‡e KvR K‡i kÖwgK‡`i cwiwPwZ wbwðZ n‡q gš¿Yvj‡q ZvwjKv †cÖiY K‡ib| ‡m †gvZv‡eK MZKvj mÜ¨vq kÖg cÖwZgš¿x †eMg gbœyRvb mywdqvb gš¿Yvj‡qi mwPe Avd‡ivRv Lvb‡K mv‡\_ wb‡q AvnZ kÖwgK‡`i †`L‡Z XvKv †gwW‡K‡ji evb© BDwb‡U hvb| cÖwZgš¿x wPwKrmvaxb kÖwgK‡`i wPwKrmvi †LuvR-Lei †bb Ges XvKv †gwW‡K‡j wPwKrmvaxb 7 Rb kÖwg‡Ki ¯^Rb‡`i nv‡Z kÖwgK Kj¨vY dvD‡Ûkb Znwej †\_‡K wPwKrmv mnvqZv wn‡m‡e RbcÖwZ 50 nvRvi UvKv K‡i †gvU mv‡o wZb jvL UvKvi †PK cÖ`vb K‡ib| Ab¨ †gwW‡K‡j wPwKrmvaxb 3 Rb AvnZ kÖwg‡Ki Avw\_©K mnvqZvi †PK `yB/GK w`‡bi g‡a¨ cÖ`vb Kiv n‡e|

       wbnZ 25 Rb kÖwg‡Ki 22 RbB wewfbœ KviLvbv, cÖwZôvb I ‡`vKvb Kg©Pvix, 2 Rb wiKkv-f¨vb PvjK Ges 1 Rb nKvi| wbnZ 25 Rb kÖwg‡Ki Avw\_©K mnvqZvi †PK `ªæZB cÖ`vb Kiv n‡e e‡j kÖg cÖwZgš¿x Rvbvb|

#

AvKZviæj/gvngy`/‡gvkvid/AveŸvm/2019/1932 NÈv

Z\_¨weeiYx b¤^i :772

**eB kw³ I mvn‡mi Drm**

**---ms¯‹„wZ cÖwZgš¿x**

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

ms¯‹„wZ welqK cÖwZgš¿x †K Gg Lvwj` e‡j‡Qb, eB kw³ I mvn‡mi Drm| GwU gvby‡li wPšÍv-‡PZbvi DrKl© mvab K‡i| wKQz m„Rbkxj †jLK-mvwnwZ¨K‡`i †dmeyKwfwËK msMVb †cbwmj cÖ\_gev‡ii g‡Zv cÖKvkbvi D‡`¨vM wb‡q‡Q hv‡`i m`m¨ msL¨v jÿvwaK| †cbwmj †`ke¨vcx RbwcÖq I mvov RvMv‡bv eB Òe½eÜyi Amgvß AvZ¥RxebxÓ wb‡q †`‡ki 13Rb cÖw\_Zhkv †jL‡Ki cvV-cÖwZwµqv AšÍf©y³ ÒAmgvß AvZ¥Rxebx - bvbvb Av‡jvq bvbvb ¯^‡iÓ kxl©K msKjb MÖš’ cÖKvk K‡i‡Q| GRb¨ msMVbwU mvayev` cvIqvi †hvM¨|

cÖwZgš¿x AvR weKv‡j Agi GKz‡k MÖš’‡gjv 2019 Gi †gvoK D‡b¥vPb g‡Â †cbwmj cvewj‡KkÝ GÛ dvD‡Ûkb KZ©…K cÖKvkbv ms¯’vwUi 52Zg cÖKvkbv ÒAmgvß AvZ¥Rxebx- bvbvb Av‡jvq bvbvb ¯^‡iÓ kxl©K MÖ‡š’i cÖKvkbv Abyôv‡b cÖavb AwZw\_i e³„Zvq Gme K\_v e‡jb|

†K Gg Lvwj` e‡jb, Avgiv mvaviYZ wewfbœ fvebv fvwe, wKšÍz †mUv‡K ev¯Í‡e cÖwZdwjZ Kwi bv| wKšÍz e½eÜy G‡ÿ‡Î e¨wZµg| wZwb gv, gvwU I gvbyl Z\_v †`k m¤ú‡K© fve‡Zb| wZwb †hUv fve‡Zb †mUv Kv‡h© cwiYZ Ki‡Zb| Zuvi wm×všÍ †bqvi ÿgZv wQj AmvaviY| ïay ¯^vaxbZv hy‡× bq, eis evqvbœi fvlv Av‡›`vj‡bI †h e½eÜyi weivU f~wgKv wQj, Zv e½eÜyi Amgvß AvZ¥Rxebx eBwU cvV bv Ki‡j mwVKfv‡e †evSv hv‡e bv|

Abyôv‡b Ab¨v‡b¨i g‡a¨ e³e¨ iv‡Lb evsjv GKv‡Wwgi mwPe Av‡bvqvi †nv‡mb, evwYR¨ gš¿Yvj‡qi hyM¥mwPe kwdK Rvgvb Ges evsjv‡`k Ávb I m„Rbkxj cÖKvkK mwgwZi mnmfvcwZ Lvb gvneye| ¯^vMZ e³„Zv K‡ib †cbwmj cvewj‡KkÝ GÛ dvD‡Ûkb Gi mfvcwZ Ac~e© wkK`vi|

#

dqmj/gvngy`/iwdK/AveŸvm/2019/1920 NÈv

Z\_¨weeiYx b¤^i : 771

**cigvYy we`y¨r †K‡›`ªi wbqš¿Yg~jK cwi`k©b Kvh©µg welqK Kg©kvjv ïiæ**

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

AvšÍR©vwZK cigvYy kw³ ms¯’v (AvBGBG) Ges evsjv‡`k cigvYy kw³ wbqš¿Y KZ©…cÿ (evckwbK) Gi †hŠ\_ D‡`¨v‡M cigvYy we`y¨r †K‡›`ªi wbqš¿Yg~jK cwi`k©b Kvh©µg welqK Pvi w`be¨vcx Kg©kvjvi D‡Øvabx Abyôvb XvKvq evsjv‡`k cigvYy kw³ wbqš¿Y KZ©…c‡ÿi Kvh©vj‡q AbywôZ n‡q‡Q| D³ Abyôv‡b weÁvb I cÖhyw³ gš¿x ¯’cwZ Bqv‡dm Imgvb cÖavb AwZw\_i e³…Zv K‡ib| Kg©kvjvq mfvcwZZ¡ K‡ib evsjv‡`k cigvYy kw³ wbqš¿Y KZ©…c‡ÿi †Pqvig¨vb cÖ‡dmi W. bCg †PŠayix Ges wi‡mvP© cvm©b wn‡m‡e AvšÍR©vwZK cigvYy kw³ ms¯’vi we‡klÁMY Dcw¯’Z wQ‡jb|

gš¿x e‡jb, cÖavbgš¿x †kL nvwmbvi cÖwZkÖæwZ I wb‡`©kbv ev¯Íevq‡bi gva¨‡g †`‡ki kvwšÍ, mg„w× I Dbœq‡bi j‡ÿ¨ wbijmfv‡e KvR K‡i †h‡Z n‡e| †mB avivevwnKZvq weÁvb I cÖhyw³ gš¿Yvj‡qi AvIZvq cÖwZôvb¸‡jv‡K ev¯Íevqbvaxb wewfbœ Dbœqbg~jK KvR `ªæZ mg‡qi g‡a¨ †kl Kivi Rb¨ wZwb AvnŸvb Rvbvb| wZwb e‡jb, eZ©gvb miKvi ev¯Íevqbvaxb wewfbœ Kv‡Ri gva¨‡g †`‡ki Dbœq‡b e×cwiKi| evsjv‡`k cigvYy kw³ Kwgkb AvšÍR©vwZK cigvYy kw³ ms¯’vi mKj wbivcËv gvb`Ð I MvBWjvBb Ges evsjv‡`‡ki we`¨gvb AvBb I wewagvjv h\_vh\_fv‡e AbymiY K‡i‡Q| cigvYy kw³ ms¯’vmn AvšÍR©vwZK, ¯’vbxq I wbR¯^ Rbe‡ji gva¨‡g mKj KvwiMwi g~j¨vqb I ch©v‡jvPbv K‡i we‡klÁ gZvgZI MÖnY Kiv n‡q‡Q| Avi †m Abyhvqx cÖwZôv‡bi mKj Kg©KZ©v I Kg©Pvix‡`i myôyfv‡e KvR K‡i hvIqvi wb‡`©kbv cÖ`vb K‡ib gš¿x|

Kg©kvjvq iƒccyi cvigvYweK we`y¨r †K‡›`ªi jvB‡mÝavix evsjv‡`k cigvYy kw³ Kwgkb, iƒccyi cvigvYweK we`y¨r †K›`ª cÖKí Ges evsjv‡`k cigvYy kw³ wbqš¿Y KZ©…c‡ÿi wewfbœ ch©v‡qi   
25 Rb weÁvbx I cÖ‡KŠkjx AskMÖnY K‡ib Ges cigvYy we`y¨r †K‡›`ªi wbg©vY ch©v‡qi wewfbœ wbqš¿Yg~jK cwi`k©b Kvh©µg wb‡q weÁvbx I cÖ‡KŠkjxe„›` cÖwkÿY wb‡”Qb|

Abyôv‡b weÁvb I cÖhyw³ gš¿Yvj‡qi Kg©KZ©ve„›`, iƒccyi cvigvYweK we`y¨r †K‡›`ªi cÖKí cwiPvjK W. †kŠKZ AvKei, †ivmvU‡gi EaŸ©Zb Kg©KZ©vmn gš¿Yvjqvaxb ms¯’vi cÖavbMY Ges cÖKí cwiPvjKMY Dcw¯’Z wQ‡jb|

#

we‡eKvb›`/gvngy`/mÄxe/AveŸvm/2019/1851 NÈv

Z\_¨weeiYx b¤^i :770

**PKevRv‡ii †Kwg‡Kj ‡MvWvDb¸‡jv XvKvi A`~‡i ¯’vbvšÍi Kiv n‡e**

**---wkígš¿x**

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

cyivb XvKvi PKevRv‡i Aew¯’Z †Kwg‡Kj †MvWvDb¸‡jvi Rb¨ XvKvi wbKUeZ©x †Kv‡bv RvqMvq AvMvgx 6 gv‡mi g‡a¨ ¯’v‡bi e¨e¯’v Kiv n‡e| cÖavbgš¿x †kL nvwmbvi wb‡`©kbv Abymv‡i G KvR `ªæZ ev¯Íevqb Kiv n‡e|

20 †deªæqvwi cyivb XvKvi PKevRv‡i fqven AwMœKv‡Ði NUbv cieZ©x Avï KiYxq wba©viY wel‡q wkí gš¿Yvj‡qi m‡¤§jb K‡ÿ Av‡qvwRZ mfvq mfvcwZZ¡Kv‡j wkígš¿x b~iæj gwR` gvngy` ûgvq~b AvR GK\_v e‡jb| wkí cÖwZgš¿x Kvgvj Avn‡g` gRyg`vi I wkí gš¿Yvj‡qi fvicÖvß mwPe †gvt Ave`yj nvwjg G mgq Dcw¯’Z wQ‡jb|

gš¿x e‡jb, bZzb ¯’v‡b hv‡Z Nb RbemwZ M‡o bv I‡V †mRb¨ †jvKvjq I Rbc\_ †\_‡K wKQzUv `~ieZ©x †Kv‡bv RvqMvq PKevRv‡ii †Kwg‡Kj †MvWvDb¸‡jvi Rb¨ ¯’vb wba©viY Kiv n‡e|

mfvq wkí cÖwZgš¿x e‡jb, ¯’vbxq e¨emvqx m¤úª`vqmn mswkøó mK‡j c~e© †\_‡K m‡PZb n‡j GB `yN©Ubv Gov‡bv †h‡Zv| GLb mKj‡K `vwqZ¡ h\_vh\_fv‡e cvjb Ki‡Z n‡e| wZwb e‡jb, cyivb XvKvi iv¯ÍvNvU cÖmvwiZ Kiv AZ¨šÍ Riæwi| GKv‡R ivRDK‡K `ªæZ GwM‡q Avm‡Z n‡e|

wkí gš¿Yvjq I Gi Aaxb `ßimg~n, `y‡h©vM e¨e¯’vcbv I ÎvY gš¿Yvjq, evwYR¨ gš¿Yvjq, kÖg I Kg©ms¯’vb gš¿Yvjq, we`y¨r wefvM, myiÿv †mev wefvM, evsjv‡`k cÖ‡KŠkj wek¦we`¨vjq, ivRDK, dvqvi mvwf©m I wmwfj wW‡dÝ, RvZxq ivR¯^ †evW©, cwi‡ek Awa`ßi, XvKv Iqvmv I evsjv‡`k e¨vs‡Ki cÖwZwbwa Ges GdwewmwmAvBmn Ab¨vb¨ mswkøó e¨emvqx msMV‡bi †bZ…e„›` mfvq AskMÖnY K‡ib|

#

gvmyg/gvngy`/iwdKzj/AveŸvm/2019/1845 NÈv

Z\_¨weeiYx b¤^i : 769

**weWv wbe©vnx †Pqvig¨v‡bi mv‡\_ myBm e¨emvqx †bZ…e…‡›`i mvÿvr**

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

AvR evsjv‡`k wewb‡qvM Dbœqb KZ©…cÿ (weWv)-Gi wbe©vnx †Pqvig¨vb KvRx †gvt Avwgbyj Bmjv‡gi mv‡\_ XvKvq Zuvi Kvh©vj‡q myBRvij¨v‡Ûi Swiss LED AG. Zug- Gi †cÖwm‡W›U I cÖwZôvZv Askx`vi Mauro Da Rold, Aci Askx`vi Dr. Frank Riesbeck Ges evwj©b wek¦we`¨vj‡qi W. †gvt wRjøyi ivngvb mvÿvr K‡ib|

KvRx Avwgbyj Bmjvg e‡jb, evsjv‡`‡ki eZ©gvb A\_©bxwZ LyeB m¤¢vebvgq| eZ©gv‡b wewb‡qvM cwi‡ek DbœZ Kivi Rb¨ miKvi wewb‡qvM bxwZi ms¯‹vi Kvh©µg nv‡Z wb‡q‡Q| wewb‡qvMKvixiv A‡bK SzuwK I k¼v gv\_vq wb‡q GKwU †`‡k wewb‡qvM Ki‡Z Av‡m| weWvi KvR wewb‡qvMKvix‡`i SzuwK I k¼v `~i Kiv| wZwb e‡jb, wewb‡qv‡Mi †ÿ‡Î Kg mg‡q m‡e©v”P †mev w`‡Z weWv memgq cÖ¯ÍyZ|

Dr. Frank Riesbeck Rvbvb, evsjv‡`‡k Zviv Ad-wMÖW †hgb- †mvjvi, evqy, ev‡qvM¨vm cÖf„wZ cÖ‡R‡± wewb‡qvM Ki‡Z AvMÖnx| GQvov, K…wl Dbœq‡bI Zv‡`i AvMÖn i‡q‡Q|

Mauro Da Rold e‡jb, evsjv‡`‡ki A\_©bxwZ w`b w`b kw³kvjx n‡”Q| evsjv‡`‡k wewb‡qv‡Mi †ÿ‡Î wZwb weWv †Pqvig¨v‡bi mnvqZv I mn‡hvwMZv Pvb| GQvovI wZwb evsjv‡`‡k wewb‡qv‡M my‡hvM-myweav I SzuwK wb‡q Av‡jvPbv K‡ib|

#

kixdv/gvngy`/iwdKzj/AveŸvm/2019/1816 NÈv

Z\_¨weeiYx b¤^i : 768

**b`x Zxi `Lj‡iv‡a D‡”Q` Awfhvb Ae¨vnZ \_vK‡e**

**----†bŠcwienb cÖwZgš¿x**

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

b`x Zxi `Lj‡iv‡a D‡”Q` Awfhvb Ae¨vnZ \_vK‡e| G †ÿ‡Î wR‡iv Ujv‡iÝ eRvq \_vK‡e| A‰ea `Lj`vi D‡”Q‡` †Kv‡U©i wb‡`©kbvi Av‡jv‡K Awfhvb Pj‡e|

‡bŠcwienb cÖwZgš¿x Lvwj` gvn&gy` †PŠayix AvR gš¿Yvj‡qi mfvK‡ÿ wkwcs wi‡cvU©vm© †dvivg, evsjv‡`k (Gm Avi Gd we) Gi †bZ…e„‡›`i mv‡\_ gZwewbgqKv‡j Gme K\_v e‡jb|

mfvi ïiæ‡Z cÖwZgš¿x m¤úªwZ ivRavbxi PKevRv‡i AwMœKv‡Ð wbn‡Zi NUbvq †kvK cÖKvk K‡ib| wZwb wbnZ‡`i iæ‡ni gvM‡divZ Kvgbv K‡ib Ges Zv‡`i cwiev‡ii m`m¨‡`i cÖwZ mg‡e`bv Rvbvb| cÖwZgš¿x AvnZ‡`i `ªæZ Av‡ivM¨ Kvgbv K‡ib| wZwb Av‡iv e‡jb, MZKvj wegvb wQbZvB‡qi welqwU miKvi mdjZvi mv‡\_ †gvKvwejv K‡i‡Q|

Lvwj` gvn&gy` †PŠayix e‡jb, †bŠcwienb gš¿Yvj‡qi Dbœqb Ges Gi ¯^”QZv I MwZkxjZv e„w×i Rb¨ wkwcs wi‡cvU©vm© †dvivg ¸iæZ¡c~Y© f~wgKv cvjb Ki‡Z cv‡i| mvsevw`K‡`i MVbg~jK †jLbx‡K wZwb mvayev` Rvbv‡eb| wZwb Rvbvb, gš¿Yvjq I Gi Aaxb¯’ wewfbœ `ßi I ms¯’vi Z\_¨ Rvb‡Z wewfbœ †mvm© \_vK‡jI mvsevw`K‡`i Ici A‡bK †ÿ‡Î wbf©i n‡Z nq| wZwb Avkv K‡i e‡jb, Gme †ÿ‡Î wkwcs wi‡cvU©vm© †dvivg Av‡iv †ewk MVbg~jK f~wgKv cvjb Ki‡e|

cÖwZgš¿x gš¿Yvj‡qi Dbœq‡bi Rb¨ fwel¨‡Z KiYxq w`K¸‡jv Zz‡j ai‡Z wkwcs wi‡cvU©vm© †dviv‡gi m`m¨‡`i cÖwZ AvnŸvb Rvbvb|

wkwcs wi‡cvU©vm© †dviv‡gi †bZ…e„›` gš¿Yvjq M„nxZ wewfbœ cÖK‡íi Kvh©µg, mgm¨v I mgvav‡bi welq¸‡jv Zz‡j a‡ib| we‡kl K‡i weAvBWweøDwUwmi w÷gvi I †dwi mvwf©‡mi my‡hvM myweav e„w× Ges IqvUvi evm Pvjy, weAvBWweøDwUGÕi †WªwRs, m`iNv‡Ui BRviv cÖ\_v I †jevi n¨vÛwjs, w¯úW‡evU PjvPj, †bŠcwienb Awa`ß‡ii Rvnv‡Ri bKkv Aby‡gv`b, mv‡f© I wewfbœ cixÿvi Awbqg, Mfxi mgy`ª e›`i, PÆMÖvg, †gvsjv I cvqiv e›`i‡K Av‡iv MwZkxj Kivi welq¸‡jv Av‡jvPbvq ¯’vb cvq|

Gm Avi Gd weÕi mfvcwZ iv‡k` Avjx cÖwZwbwa`‡ji †bZ…Z¡ †`b| mvaviY m¤úv`K KvRx †R‡ej AbyôvbwU mÂvjb K‡ib| Kvh©Kix m`m¨ Avkxl †mb, kwdKzj Bmjvg, GBP Avi mvMi, wK‡kvi miKvi, dviæK Lvb, gvngy` AvKvk, iZb ev‡jv, †Zvdv¾j †nv‡mb, ZwiKzj Bmjvg mygb, Kvgvj †nv‡mb ZvjyK`vi, Zvmbxg gnmxb, MvRx kvn‡bIqvR, gvndzRyi ingvb ïf, kwdKzj Bmjvg I ivbv gvmy` G mgq Dcw¯’Z wQ‡jb|

#

Rvnv½xi/gvngy`/mÄxe/AveŸvm/2019/1813 NÈv

Z\_¨weeiYx b¤^i : 767

**‡g‡Uªv‡ij wbg©v‡Y w÷j ¯Œz cvBj WªvBwfs Kv‡Ri D‡Øvab Ki‡jb Ievq`yj Kv‡`i**

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

†g‡Uªv‡ij iæU-6 Gi wbg©vYKv‡R hy³ n‡jv bZzb gvÎv| †`‡k cÖ\_gev‡ii g‡Zv †Kv‡bv ¯’vcbv wbg©v‡Y AZ¨vaywbK cÖhyw³i Ask wn‡m‡e w÷j ¯Œz cvBj WªvBwfs-Gi e¨envi ïiæ n‡jv|

moK cwienb I †mZzgš¿x Ievq`yj Kv‡`i AvR we‡K‡j ivRavbxi Lvgvievwo‡Z †g‡Uªv‡ij iæU-6 Gi 5bs c¨v‡K‡Ri w÷j ¯Œz cvBj WªvBwfs Kv‡Ri D‡Øvab K‡ib|

†g‡Uªv‡ij iæU-6 wbg©v‡Y c¨v‡KR-5 Gi AvIZvq AvMviMuvI †\_‡K KvIivb evRvi ch©šÍ wZb wK‡jvwgUv‡ii †ewk †g‡Uªv jvBb wbwg©Z n‡e| c¨v‡KR-5 ev¯Íevq‡b †hŠ\_fv‡e †`kxq cÖwZôvb Avãyj †gv‡bg wjwg‡U‡Wi mv‡\_ Rvcv‡bi PEKKEN-ABENIKKO †Kv¤úvwb KvR Ki‡Q|

†g‡Uªv‡i‡ji e¨e¯’vcbv cwiPvjK Gg G Gb wQwÏK, cÖKí cwiPvjK AvdZve DwÏb ZvjyK`vi, Avãyj †gv‡bg wjwg‡U‡Wi Dce¨e¯’vcbv cwiPvjK gwnDwÏb †gv‡bg I cwiPvjK AvwbQ nvweemn mswkøó Kg©KZ©vMY G mgq Dcw¯’Z wQ‡jb|

#

Iqvwj`/gvngy`/iwdKzj/AveŸvm/2019/1759 NÈv

Z\_¨weeiYx b¤^i : 766

**K…wli Dbœq‡b cÖ‡qvRb AvšÍR©vwZK mn‡hvwMZv**

**-K…wlgš¿x**

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

K…wlgš¿x W. †gv: Avãyi iv¾v‡Ki mv‡\_ AvR mwPevjq Zvi AwdmK‡ÿ AvšÍR©vwZK Avjy ‡K›`ª (international potato center, CIP) Gi `wÿY Gwkqvi AvÂwjK mgš^qKvix I Kvw›U« g¨v‡bRvi Dr.U.S Sing mvÿvr K‡ib| Gmgq K…wl mwPe †gv: bvwmiæ¾vgvb Dcw¯’Z wQ‡jb|

K…wlgš¿x e‡jb, †`‡k K…wl Drcv`‡bi w`K †\_‡K avb, Mg I fyÆvi c‡iB PZz\_© ¯’v‡b Av‡Q Avjy| AbyK‚j AvenvIqv I gvwUi Kvi‡Y wKQz †Rjvq cÖvq 30wU Rv‡Zi Avjyi Pvl e¨vcKfv‡e n‡q \_v‡K| weMZ eQ‡i Avjyi Drcv`b Avgv‡`i Pvwn`vi †P‡q cÖvq 30 jvL †g:Ub †ewk n‡q‡Q| ‡jBU eøvBU (Late blight) †iv‡Mi wb‡lavÁvi Kvi‡Y AvšÍR©vwZK evRv‡i eZ©gv‡b Avgiv cÖ‡ek Ki‡Z cviwQbv | hw`I evsjv‡`k †\_‡K A‡bK K…wlRvZ cY¨ we‡`‡k ißvwb n‡”Q|

gš¿x Av‡iv e‡jb, K…wlLv‡Zi Rb¨ UvKvi †Kvb mgm¨v †bB| Avjy cÖwµqvRvZ K‡i AvšÍR©vwZK evRv‡i cÖ‡ek Kiv‡Z Avgiv Avcbv‡`i mn‡hvwMZv PvB| cÖwZwbwa`‡ji †bZ„e„›` GLv‡Z evsjv‡`k‡K meiKg mn‡hvwMZvi Avk¦vm †`b| evsjv‡`k I wmAvBwc mgš^q K‡i †hŠ\_fv‡e mgm¨vi mgvavb K‡i GLv‡Zi Av‡iv Dbœqb Ki‡Z Pvq| wmAvBwcÕi `wÿY Gwkqvi AvÂwjK mgš^qKvix Ges Kvw›U« g¨v‡bRv‡ii mv‡\_ Avev‡iv ‰eV‡K e‡m GLv‡Zi Dbœq‡b KiYxq m¤ú‡K© cvi¯úwiK AwfÁZv wewbgq Ki‡Z Pvb gš¿x|

K…wl mwPe e‡jb,Avgv‡`i we‡Ri Pvwn`v 6 jvL †g:Ub Gi g‡a¨ weGwWwm wUmy¨ Drcv`b K‡i 1jvL †g:Ub| evwK weR Avgv‡`i †`‡ki K…lKiv Drcv`b K‡i| hw`I Avgv‡`i Avjyi Rb¨ evsjv‡`k K…wl M‡elYv Bbw÷wUDU (evwi)‡Z j¨ve i‡q‡Q| GQvovI weGwWwmÕi wUmy¨ KvjPvi j¨v‡e weR Drcbœ K‡i \_v‡K| GQvov Avgv‡`i †`‡k K…lKÕiv jvfevb dmj Drcv`‡b eiveiB AvMÖnx †hgb nvwb †gjb we‡`wk wQj GLb h‡kv‡ii wKQz GjvKvq Pvl n‡”Q|

cÖwZwbwa`‡j Av‡iv wQ‡jb Dr.Samrendu Mohanty, Director Asia, CIP, Dr M.A Bari Former Director evsjv‡`k K…wl M‡elYv Bbw÷wUDU (evwi) I evsjv‡`k K…wl wek¦we`¨vj‡qi cÖ‡dmi W. jyrdzj †nv‡mb|

#

wMqvm/gwbiæ¾vgvb/iwe/kvgxg/2019/1615 NÈv

Z\_¨weeiYx b¤^i : 765

**Awbevmx evsjv‡`wk‡`i Kv‡Q evsjv‡`‡k wewb‡qv‡Mi m¤¢vebv Zz‡j ai‡Z n‡e**

**- weWv wbe©vnx †Pqvig¨vb**

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

Awbevmx evsjv‡`wk‡`i K\_v ïb‡Z n‡e| Zv‡`i wewfbœ aviYv MÖnY K‡i Zvi d‡jvAvc ivL‡Z n‡e| Zv‡`i Kv‡Q evsjv‡`‡k wewb‡qv‡Mi m¤¢vebv Zz‡j ai‡Z n‡e|

AvR evsjv‡`k wewb‡qvM Dbœqb KZ©…cÿ (weWv)-Gi wbe©vnx †Pqvig¨vb KvRx †gvt Avwgbyj Bmjvg weWv Kvh©vj‡q AvMvgx 26-27 †deªæqvwi 2019 G c¨vb c¨vwmwdK †mvbviMvuI †nv‡U‡j AbywôZe¨ NRB (Non-Resident Bangladeshi) cÖ‡KŠkjx‡`i m‡¤§j‡bi P‚ovšÍ cÖ¯ÍywZ mfvq mfvcwZZ¡ Kv‡j GK\_v e‡jb|

KvRx †gvt Avwgbyj Bmjvg e‡jb, Awbevmx evsjv‡`wk‡`i Kv‡Q evsjv‡`k wewb‡qvM Dbœqb KZ©…cÿ, evsjv‡`k A\_©‰bwZK AÂj KZ©…cÿ (‡eRv), cvewjK cÖvB‡fU cvU©bviwkc (wcwcwc), evsjv‡`k nvB‡UK cvK© A\_wiwU (weGBPwUwcG) wewb‡qv‡Mi †ÿ‡Î wK KvR K‡i, Kv‡Ri aiY †Kgb Zv Zz‡j ai‡Z n‡e †hb Zviv evsjv‡`‡k wewb‡qv‡Mi mgMÖ wPÎwU eyS‡Z cv‡i|

A\_©‰bwZK m¤úK© wefvM, †m›Uvi di GbAviwe, evsjv‡`k nvB‡UK cvK© A\_wiwU, evsjv‡`k ch©Ub K‡c©v‡ikb, evsjv‡`k A\_©‰bwZK AÂj KZ©…cÿ, XvKv †P¤^vi Af Kgvm© GÛ BÛvw÷«, XvKv †g‡UªvcwjUb †P¤^vi Af Kgvm© GÛ BÛvw÷«, wPUvMvs †P¤^vi Af Kgvm© GÛ BÛvw÷«, evsjv‡`k Mv‡g©›Um g¨vbyd¨vKPvivm© GÛ G·‡cvU©vm© G‡mvwm‡qkb (wewRGgBG), evsjv‡`k wbUIqvi g¨vbyd¨vKPvivm© GÛ G·‡cvU©vm© G‡mvwm‡qkb (we‡KGgBG), evsjv‡`k G‡MÖv cÖ‡mmim G‡mvwm‡qkb, evsjv‡`k G‡mvwm‡qkb Af mdUIqvi GÛ Bbdi‡gkb mvwf©‡mm (‡ewmm), evsjv‡`k G‡mvwm‡qkb Af Kb÷«vKkb BÛvw÷«, AvLZvi dvwb©Pvi Gi cÖwZwbwaMY Ges weWvi Kg©KZ©ve„›` mfvq Dcw¯’Z wQ‡jb|

#

kixdv/gvngy`/gwbiæ¾vgvb/Rmxg/kvgxg/2019/1550 NÈv

Z\_¨weeiYx b¤^i : 764

**K…wlwe` Bbw÷wUDkb evsjv‡`k Gi mfvcwZi g„Zz¨‡Z †bŠcwienb cÖwZgš¿xi †kvK**

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

K…wlwe` Bbw÷wUDkb evsjv‡`k Gi mfvcwZ K…wlwe` G Gg Gg mv‡jnÕi g„Zy¨‡Z Mfxi †kvK I `y:L cÖKvk K‡i‡Qb †bŠcwienb cÖwZgš¿x Lvwj` gvn&gy` †PŠayix |

AvR GK †kvKevZ©vq cÖwZgš¿x giû‡gi iæ‡ni gvM‡divZ Kvgbv K‡ib Ges †kvKmšÍß cwiev‡ii m`m¨‡`i cÖwZ mg‡e`bv Rvbvb|

D‡jøL¨, K…wlwe` G Gg Gg mv‡jn 24 †deªæqvwi 2019 mÜ¨vq wm½vcyi¯’ gvD›U GwjRv‡e\_ nvmcvZv‡j wPwKrmvaxb Ae¯’vq B‡šÍKvj K‡ib| Zuvi eqm n‡qwQj 62 eQi| wZwb ¯¿x, GK cyÎ, GK Kb¨v Ges AvZ¥xq¯^Rbmn AmsL¨ ¸YMÖvnx †i‡L †M‡Qb|

#

Rvnv½xi/gwbiæ¾vgvb/Rmxg/kvgxg/2019/1255 NÈv

Z\_¨weeiYx b¤^i : 763

**PjwZ A\_©eQ‡i grm¨ I cÖvwYm¤ú` gš¿Yvj‡qi**

**cÖKí ev¯Íevq‡bi AMÖMwZ 34 `kwgK 43 kZvsk**

XvKv, 13 dvêyb (25 †deªæqvwi) :

2018-19 A\_©eQ‡i grm¨ I cÖvwYm¤ú` gš¿Yvj‡qi †gvU 44wU cÖK‡í eivÏ cÖvq 900 †KvwU UvKv| Gi g‡a¨ MZ 7 gv‡m e¨q n‡q‡Q 284 †KvwU 47 jvL UvKv, hv †gvU eiv‡Ïi 34 `kwgK 74 kZvsk| Rvbyqvwi-2019 ch©šÍ cÖKí ev¯Íevq‡bi RvZxq Mo-AMÖMwZ 34 `kwgK 43 kZvsk|

24 †deªæqvwi grm¨ I cÖvwYm¤ú` gš¿Yvj‡qi m‡¤§jbK‡ÿ cÖwZgš¿x Avkivd Avjx Lvb Lmiæi mfvcwZ‡Z¡ grm¨ I cÖvwYm¤ú` DcLv‡Zi c„\_K c„\_K evwl©K Dbœqb Kg©m~wPi (GwWwc) ch©v‡jvPbv mfvq Gme Z\_¨ Rvbv‡bv nq| cÖwZgš¿x gš¿Yvj‡qi cÖKí ev¯Íevq‡b axiMwZ‡Z Am‡šÍvl cÖKvk K‡i G‡ÿ‡Î Amg\_© cÖKí cwiPvjK‡`i Rb¯^v‡\_© †¯^”Qvq `vwqZ¡ †Q‡o †`qvi AvnŸvb Rvbvb|

2017-18 A\_©eQ‡i †gvU 47wU cÖK‡í eivÏ wQj cÖvq 990 †KvwU UvKv Ges GKB mg‡q e¨q n‡qwQj cÖvq 278 †KvwU UvKv| PjwZ A\_©eQ‡i 44wU cÖK‡íi g‡a¨ gš¿Yvj‡qi grm¨ DcLv‡Zi 21wU cÖK‡íi eivÏ 440 †KvwU 70 jvL UvKv Ges 7 gv‡m G DcLv‡Z e¨q n‡q‡Q 142 †KvwU UvKv| Gme cÖK‡íi g‡a¨ grm¨ Awa`ß‡ii 14wU cÖK‡í 341 †KvwU 28 jvL, grm¨ M‡elYv Bbw÷wUD‡Ui 5wU cÖK‡í cÖvq mv‡o 34 †KvwU Ges grm¨ Dbœqb K‡c©v‡ik‡bi 2wU cÖK‡í eivÏ cÖvq 65 †KvwU UvKv| Z‡e MZ A\_©eQ‡i grm¨ DcLv‡Zi 26wU cÖK‡í eivÏK…Z 486 †KvwU 60 jvL UvKvi g‡a¨ GKB mg‡q e¨q n‡qwQj cÖvq mv‡o 121 †KvwU UvKv|

Aciw`‡K, PjwZ A\_©eQ‡i cÖvwYm¤ú`Lv‡Zi 23wU cÖK‡íi eivÏ n‡”Q †gvU 378 †KvwU 22 jvL UvKv Ges 7 gv‡m G DcLv‡Z e¨q n‡q‡Q cÖvq 143 †KvwU UvKv| Gme cÖK‡íi g‡a¨ cÖvwYm¤ú` Awa`ß‡ii 16wU cÖK‡í 340 †KvwU 24 jvL, cÖvwYm¤ú` M‡elYv Bbw÷wUD‡Ui 6wU cÖK‡í 30 †KvwU 72 jvL Ges †f‡Uwibvwi KvDwÝ‡ji 1wU cÖK‡í 7 †KvwU 26 jvL UvKv eivÏ Av‡Q| Z‡e MZ   
2017-18 A\_©eQ‡i G DcLv‡Zi 21wU cÖK‡í eivÏK…Z cÖvq 502 †KvwU 50 jvL UvKvi g‡a¨ GKB mg‡q e¨q n‡qwQj †gvU 156 †KvwU 25 jvL UvKv|

#

kvn Avjg/gwbiæ¾vgvb/iwe/Rmxg/kvgxg/2019/1145 NÈv